

# फिर महान बन

नरेन्द्र शर्मा



कवि परिचय :

नरेन्द्र शर्मा का जन्म सन् 1913 ईस्वी को उत्तर प्रदेश के बुलंदर शहर जनपद के जहाँगीरपुर नामक गाँव में हुआ । सन् 1936 ईस्वी में इलाहाबाद विश्वविद्यालय से एम.ए. पास किया । साहित्य-सृजन के प्रति उनकी पहले से ही रुचि रही । छात्र-जीवन में ही 'भूलझूल' तथा 'कर्णफूल' प्रकाशित हुए । फिर उन्होंने स्वतंत्रता-संग्राम में भाग लिया । जेल गए । कुछ दिनों तक अध्यापक हुए । फिर सिनेमा के लिए गीत लिखे । बाद में मुम्बाई आकाशवाणी केन्द्र में नियुक्त हुए । 1988 में आपका देहान्त हो गया । प्रमुख कविता संकलन हैं :- प्रभात फेरी, प्रवासी के गीत, प्रीति कथा, कामिनी, अग्नि शस्य, कदली वन, प्यासा निर्झर, उत्तरजय, बहुत रात गए आदि ।

नरेन्द्र शर्मा की कविता में मानव-प्रेम, प्रकृति-सौन्दर्य के सरल और सजीव चित्र मिलते हैं । जड़ वस्तुओं में मानवीय चेतना, करुणा की भावधारा बहती है । बाद में वे समाज के दुःख-दर्द के प्रति आकृष्ट हुए और असुविधाओं को दूर-करने की आवाज उठाई । विद्रोह किया ।

शर्माजी की भाषा सरल, शुद्ध और भावगर्भक होती है ।

भाव-बोध :

मनुष्य अमृत की सन्तान है । अपनी महानता के कारण वह सबसे श्रेष्ठ प्राणी के रूप में परिचित है । लेकिन आज वह अपना कर्तव्य भूल गया है । अपने कर्तव्य पर सचेतन होने के लिए कवि ने इस कविता में सलाह दी है । मनुष्य को मनुष्यता का पाठ पढ़ाने के लिए, संसार को स्वर्ग बनाने के लिए यह कवि की चेतावनी है । कवि ने मनुष्य को फिर महान बनने की प्रेरणा दी है ।

फिर महान बन, मनुष्य !

फिर महान बन ।

मन मिला अपार प्रेम से भरा तुझे,  
इसलिए कि प्यास जीव-मात्र की बुझे,  
विश्व है तृषित, मनुष्य, अब न बन कृपण ।

फिर महान बन ।

शत्रु को न कर सके क्षमा प्रदान जो,  
जीत क्यों उसे न हार के समान हो ?  
शूल क्यों न वक्ष पर बनें विजय-सुमन !

फिर महान बन ।

दुष्ट हार मानते न दुष्ट नेम से,  
पाप से घृणा महान है, न प्रेम से  
दर्प-शक्ति पर सदैव गर्व कर न, मन ।

फिर महान बन ।

### शब्दार्थ

महान - श्रेष्ठ । अपार - असीम । प्यास - तृषा । तृषित - प्यासा । कृपण - कंजूस । क्षमा - माफी । जीवमात्र - प्राणीमात्र । जीत - विजय । हार - पराजय । विजय - जीत के फूल । शूल - काँटा, पीड़ा । सुमन - पुष्प, फूल, प्रसून, कुसुम । घृणा - नफरत । सदैव - सदा, सर्वदा । गर्व - घमंड, अभिमान । वक्ष - हृदय । नेम - नियम, कायदा, दस्तूर, रीति । दर्पशक्ति - घमण्ड ।

1. इन प्रश्नों के उत्तर दो-तीन वाक्यों में दीजिए :

- (क) मनुष्य को किस प्रकार का मन मिला है ? उससे वह क्या कर सकता है ?
- (ख) महान मनुष्य किसे कहते हैं ?
- (ग) मनुष्य को महान बनने के लिए क्या करना चाहिए और क्या नहीं करना चाहिए ?
- (घ) मनुष्य को महान बनने के लिए कवि ने क्या प्रेरणा दी है ?
- (ङ) किसी की जीत हार के समान क्यों होनी चाहिए ?

2. निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर एक या दो वाक्यों में दीजिए :

- (क) कवि ने मनुष्य से क्या बनने को कहा ?
- (ख) मनुष्य को किस प्रकार मन मिला है ?
- (ग) विश्व आज क्या है ?
- (घ) कवि मनुष्य से क्या न बनने को कहा है ?
- (ङ) जो शत्रु को क्षमा प्रदान नहीं करता, उसकी जीत किसके समान है ?
- (च) विजय का सुमन क्या बनता है ?
- (छ) किस से घृणा महान है ?
- (ज) किस पर सदैव गर्व न करना चाहिए ?
- (झ) 'फिर महान बन' कविता के कवि का नाम क्या है ?
- (ञ) 'फिर महान बन' कविता का मूल भाव क्या है ?

3. पाठ के आधार पर निम्नलिखित रिक्त स्थानों को भरिये :

फिर महान \_\_\_\_\_ ।

शत्रु को न \_\_\_\_\_ सके \_\_\_\_\_ प्रदान जो,

जीत क्यों उसे न \_\_\_\_\_ के समान हो ?

दुष्ट \_\_\_\_\_ मानते न दुष्ट \_\_\_\_\_ से,

\_\_\_\_\_ घृणा महान \_\_\_\_\_ न \_\_\_\_\_ से ।

\_\_\_\_\_ पर सदैव गर्व करना न \_\_\_\_\_ ।

भाषा - ज्ञान

1. उदाहरण के अनुसार निम्नलिखित शब्दों के समानार्थक शब्द लिखिए :

उदाहरण :

महान - विशिष्ट

विश्व .....

सुमन - पुष्प

कृपण .....

मनुष्य .....

क्षमा .....

अपार .....

शत्रु .....

प्रेम .....

हार .....

प्यास .....

भूल .....

जीव .....

दर्प .....

वक्ष .....

दुष्ट .....

नेम .....

गर्व .....

2. उदाहरण के अनुसार निम्नलिखित शब्दों के विलोम/विपरीत शब्द लिखिए :

उदाहरण :

प्रेम - घृणा	क्षमा .....
शत्रु - मित्र	प्रदान .....
महान .....	जीत .....
कृपण .....	समान .....
मनुष्य .....	विजय .....
दुष्ट .....	पाप .....

3. निम्नलिखित शब्दों के वचन बदलिए :

उदाहरण :

मनुष्य	-	मनुष्य
तुझे	-	_____
शत्रु	-	_____
जीव	-	_____
कवि	-	_____

4. आप भी एक कविता लिखने की कोशिश करें :

